पेज 02
स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के अमर नायक

साप्ताहिक
शहर सत्ता
हम दिखाएंगे आईना...

पेज 07
नवागांव में भी जली थी आजादी की मशाल

PRGI NO. CTHIN/25/A2378 | सोमवार, 17 अगस्त से 23 अगस्त 2026 | वर्ष : 02 अंक : 24 पृष्ठ : 12 मूल्य : 5 रुपए | www.shaharsatta.com

तिरंगा हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, स्वाभिमान और एकता का प्रतीक: मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

- सीएम साय ने 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत मुख्यमंत्री निवास में फहराया तिरंगा
- घरों पर तिरंगा फहराकर राष्ट्रभक्ति के महाअभियान से जुड़ने का आह्वान किया
- तिरंगा हमें स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और बलिदान का कराता है स्मरण: मुख्यमंत्री

शहरसत्ता /रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज राजधानी रायपुर के सिविल लाइन स्थित मुख्यमंत्री निवास में 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेशवासियों से स्वतंत्रता दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर अपने-अपने घरों पर तिरंगा फहराकर राष्ट्रभक्ति के इस महाअभियान से जुड़ने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि तिरंगा हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, स्वाभिमान और एकता का प्रतीक है। तिरंगे को देखते ही प्रत्येक भारतीय का मन गर्व और राष्ट्रप्रेम से भर उठता है। यह 140 करोड़ भारतीयों को एकता के सूत्र में बांधने वाला हमारा राष्ट्रीय गौरव है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'हर घर तिरंगा' अभियान के माध्यम से देशवासियों को राष्ट्रीय ध्वज के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ने की अभिनव पहल की है। आज यह अभियान एक व्यापक जनांदोलन का स्वरूप ले चुका है। गांव से शहर तक, घर-घर में लहराता तिरंगा देश की एकता, अखंडता और राष्ट्र के प्रति प्रत्येक नागरिक के समर्पण को अभिव्यक्त करता है।

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री साय ने प्रदेशवासियों से आह्वान करते हुए कहा कि स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर हम सभी अपने घरों पर पूरे सम्मान और गौरव के साथ तिरंगा फहराएं। तिरंगे को नमन करते हुए उन स्वतंत्रता सेनानियों और अमर शहीदों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें, जिनके संघर्ष और बलिदान से हमें स्वतंत्र भारत में सांस लेने का सौभाग्य मिला है। मुख्यमंत्री श्री साय ने स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की धरती ने अनेक वीर सपूतों को जन्म दिया, जिन्होंने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।

शहीद वीर नारायण सिंह जैसे महान जनजातीय नायक ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। प्रदेश के अनेक स्वतंत्रता सेनानियों का त्याग और संघर्ष हमारी गौरवशाली विरासत है। आज हम उन सभी वीरों को श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। उन्होंने कहा कि 'हर घर तिरंगा' अभियान विशेष रूप से नई पीढ़ी को स्वतंत्रता संग्राम के गौरवशाली इतिहास और राष्ट्रीय मूल्यों से जोड़ने का सशक्त माध्यम बन रहा है। जब बच्चे और युवा अपने घरों पर तिरंगा फहराते हैं, तो उनमें राष्ट्र के प्रति गौरव, जिम्मेदारी और कर्तव्य का भाव और अधिक मजबूत होता है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि स्वतंत्रता हमें हमारे पूर्वजों के असंख्य बलिदानों से प्राप्त हुई है।

अब इस स्वतंत्रता को सशक्त और सार्थक बनाना हम सभी का दायित्व है। देश आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। इस राष्ट्रीय संकल्प की सिद्धि के लिए प्रत्येक नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण है। मुख्यमंत्री ने कहा कि तिरंगे की छांव में हम सभी भारतीय हैं और राष्ट्रहित हम सभी के लिए सर्वोपरि है। 'हर घर तिरंगा' अभियान इसी राष्ट्रीय चेतना को और प्रगाढ़ करने का अभियान है। उन्होंने प्रदेशवासियों से आह्वान किया कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर घर-घर तिरंगा फहराएं और एकजुट होकर विकसित, सशक्त एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का संकल्प लें।

विभाजन की पीड़ा से सीख लेकर देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखना हम सभी का दायित्व

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस समारोह में मुख्यमंत्री हुए शामिल

रायपुर। इतिहास केवल अतीत की घटनाओं का लेखा-जोखा नहीं, बल्कि वर्तमान को दिशा देने और भविष्य को सुरक्षित बनाने की सीख भी है। इसलिए विभाजन की विभीषिका और उससे मिले सबक को पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्मरण रखना आवश्यक है। विभाजन की पीड़ा हमें देश की एकता, अखंडता और सामाजिक सद्भाव को हर परिस्थिति में अक्षुण्ण रखने का संदेश देती है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज राजधानी रायपुर के संचालनालय पुरातत्व स्थित मुक्ताकाशी मंच में आयोजित 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के राज्य स्तरीय समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही। समारोह में विभाजन की त्रासदी में प्राण गंवाने वाले लोगों को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया तथा विस्थापन का दंश झेलने वाले परिवारों के संघर्ष, साहस और धैर्य को नमन किया गया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि वर्ष 1947 में देश का विभाजन केवल भू-भाग और सीमाओं का बंटवारा नहीं था। इस त्रासदी ने लाखों लोगों को अपनी जन्मभूमि, घर-बार और अपनों से बिछड़ने के लिए विवश कर दिया। बंगाली, सिख और सिंधी समाज सहित अनेक समुदायों के लाखों परिवारों ने विस्थापन की असहनीय पीड़ा झेली। जिन्होंने अपनी आंखों से उस दौर की भयावहता देखी, उनमें से अधिकांश आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके परिवारों और आने वाली पीढ़ियों की स्मृतियों में वह पीड़ा आज भी जीवित है। उन्होंने कहा कि विभाजन के कारण विस्थापित हुए लोगों ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों का सामना किया। अपना सब कुछ पीछे छोड़कर उन्होंने नए स्थानों पर लगभग शून्य से जीवन की शुरुआत की। अपने अथक परिश्रम, पुरुषार्थ और जीवटता से उन्होंने स्वयं को पुनः स्थापित किया और देश तथा समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका संघर्ष और साहस आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायी है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन की त्रासदी में प्राण गंवाने वाले लोगों के बलिदान और विस्थापन का दंश झेलने वाले परिवारों के संघर्ष को उचित सम्मान देने तथा नई पीढ़ी को इतिहास के इस अध्याय से परिचित कराने के उद्देश्य से 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। यह दिवस केवल अतीत की पीड़ा को स्मरण करने का अवसर नहीं है, बल्कि उस त्रासदी से सीख लेकर राष्ट्र की एकता और अखंडता के प्रति अपने संकल्प को और मजबूत करने का भी अवसर है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी आने वाली पीढ़ियों को यह जानना आवश्यक है कि देश की स्वतंत्रता के साथ विभाजन के समय लाखों देशवासियों को कितनी बड़ी मानवीय त्रासदी से गुजरना पड़ा था। इतिहास का स्मरण इसलिए भी आवश्यक है, ताकि भविष्य में ऐसी परिस्थितियों की पुनरावृत्ति न हो और समाज में एकता, सद्भाव तथा भाईचारे की भावना और मजबूत हो। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि आज भारत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है।

साप्ताहिक शहर सत्ता
हम दिखाएंगे आईना...

माटी के लाल

छत्तीसगढ़ का गौरवशाली

स्वतंत्रता संग्राम और उसके अमर नायक

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ का योगदान अत्यंत गौरवशाली और ऐतिहासिक रहा है। यहों के आदिवासियों, ज़मींदारों और राजनीतिक नेताओं ने ब्रिटिश हुकूमत और उनके अन्यायपूर्ण नियमों के खिलाफ सशक्त आवाज़ उठाई।

शहीद वीर नारायण सिंह
(1795 – 1857)

उन्हें छत्तीसगढ़ का प्रथम शहीद माना जाता है। सोनाखान के ज़मींदार वीर नारायण सिंह ने 1856 के भीषण अकाल के समय गरीबों की भूख मिटाने के लिए मालगुजार के अनाज गोदामों को खोल दिया था।

- **योगदान:** 1857 की क्रांति के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया।
- **बलिदान:** 10 दिसंबर 1857 को रायपुर के जयस्तंभ चौक पर उन्हें फांसी दे दी गई।

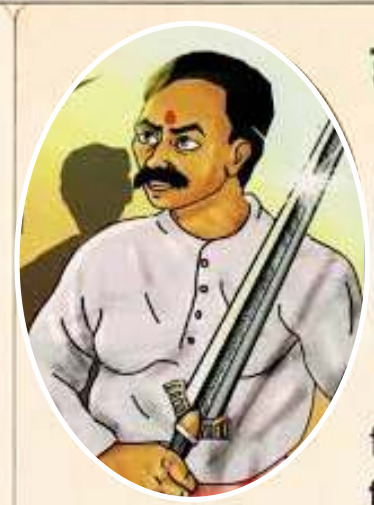

हनुमान सिंह
(छत्तीसगढ़ का मंगल पांडे)

रायपुर की तृतीय रेजीमेंट के मैगजीन लस्कर हनुमान सिंह ने ब्रिटिश सैन्य अधिकारी मेजर सिडवेल की हत्या कर 1858 में सिपाही विद्रोह का बिगुल फूंका।

- **योगदान:** अपने 17 साथियों के साथ ब्रिटिश सेना के खिलाफ सीधा विद्रोह किया। उनके साथियों को फांसी दे दी गई, लेकिन हनुमान सिंह अंग्रेजों की पकड़ में कभी नहीं आए।

गुंडाधूर और भूमकाल विद्रोह
(1910)

बस्तर के नेतानार गाँव के आदिवासी नायक गुंडाधूर ने जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए 'भूमकाल आंदोलन' की शुरुआत की।

- **प्रतीक:** लाल मिर्च, आम की टहनियों और धनुष-बाण भेजकर आदिवासियों को एकजुट किया गया।

पंडित सुंदरलाल शर्मा
(1881 – 1940)

छत्तीसगढ़ में सामाजिक पुनर्जागरण और स्वतंत्रता आंदोलन के सुत्रधार। उन्हें "छत्तीसगढ़ का गांधी" कहा जाता है।

- **योगदान:** 1920 में धमतरी के 'कंडेल नहर सत्याग्रह' का स फेल नेतृत्व किया।
- 1925 में राजीव लोचन मंदिर में अछूतोद्धार का कार्य किया, जिसकी प्रशंसा महात्मा गांधी ने भी की थी।

ठाकुर प्यारेलाल सिंह
(1891 – 1954)

छत्तीसगढ़ में छात्र आंदोलन और मजदूर आंदोलन के जनक।

- **योगदान:** राजनंदगांव में ऐतिहासिक BNC मिल मजदूर हड़ताल (1920, 1924, 1937) का सफल नेतृत्व किया।

पंडित रविशंकर शुक्ल
(1877 – 1956)

छत्तीसगढ़ के प्रमुख राष्ट्रीय नेता जो आगे चलकर मध्य प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री बने।

- **योगदान:** सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मध्य प्रांत से जनआंदोलनों का संचालन किया।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख आंदोलन: एक नज़र में

वर्ष	आंदोलन / एटना	मुख्य नेतृत्वकर्ता	महत्व
1857	सोनाखान का विद्रोह	वीर नारायण सिंह	छत्तीसगढ़ में 1857 की क्रांति की शुरुआत
1910	भूमकाल आंदोलन	गुंडाधूर	ब्रिटिश वन नीतियों के खिलाफ बस्तर का विद्रोह
1920	कंडेल नहर सत्याग्रह	पं. सुंदरलाल शर्मा, छोटेलाल श्रीवास्तव	सिंचाई कर के खिलाफ गांधीवादी सत्याग्रह
1920	BNC मिल हड़ताल	ठाकुर प्यारेलाल सिंह	देश की सबसे लंबी चलने वाली मजदूर हड़ताल
1930	जंगल सत्याग्रह (रुद्री-नवागांव, तमोरा)	बाबूटोपाल, यति यतनलाल	ब्रिटिश वन कानूनों का उल्लंघन

छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण अध्याय

10 दिसंबर 1857

शहीद वीर नारायण सिंह को रायपुर में फांसी दी गई। छत्तीसगढ़ में क्रांति का पहला बड़ा अध्याय।

कंडेल नहर नहर 1920

धमतरी में किसानों पर लगाए गए अवैध जल-कर के खिलाफ अहिंसक आंदोलन। महात्मा गांधी का प्रथम छत्तीसगढ़ आगमन हुआ।

सविनय अवज्ञा एवं जंगल सत्याग्रह

रुद्री-नवागांव, सिहावा और तमोरा में आदिवासियों और किसानों ने कानून तोड़कर सत्याग्रह किया।

रायपुर षड़यंत्र केस

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान परस्साम सोनी और उनके साथियों द्वारा बम और हथियार बनाने की योजना बनाई गई।

उनकी कुर्बानी से मिली आज़ादी, उनकी स्मृति से बनेगा कल का भारत

कांग्रेस पर वनमंत्री कश्यप का पलटवार:कहा- झीरम पर सियासत शहीदों का अपमान

शहर सत्ता/रायपुर। बस्तर स्थित झीरम घाटी नक्सली हमले को लेकर रायपुर में फिर से राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज के बयान पर वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने कभी वीर सपूतों और शहीदों का अपमान नहीं किया। झीरम घाटी की घटना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण थी और भाजपा सरकार व संगठन ने हमेशा नक्सलियों की कड़ी निंदा की है। केदार कश्यप ने कहा कि दीपक बैज भाजपा पर आरोप लगाने से पहले कांग्रेस के नेताओं के बयानों पर अपना रुख स्पष्ट करें।उन्होंने सवाल उठाया कि राहुल गांधी, दिग्विजय सिंह या छत्तीसगढ़ कांग्रेस के नेताओं की ओर से नक्सलवाद को लेकर विवादित बयान सामने आने पर कांग्रेस नेतृत्व चुप क्यों रहता है। उन्होंने हिड़मा को 'रोल मॉडल' बताए जाने जैसी बातों का जिक्र करते हुए कहा कि ऐसे बयानों पर कांग्रेस खुलकर विरोध क्यों नहीं करती।न मंत्री ने कहा कि कांग्रेस एक तरफ शहीदों के नाम पर राजनीति करती है, दूसरी तरफ नक्सलियों के प्रति सहानुभूति वाले बयानों पर चुप रहती है। उन्होंने दीपक बैज से पूछा कि ऐसे बयानों का वे सार्वजनिक रूप से विरोध क्यों नहीं करते। कश्यप ने इसे कांग्रेस की दोहरी नीति बताया।

प्रदेशभर में कांग्रेस का पैदल मार्च और सत्याग्रह

शहर सत्ता/रायपुर। हल्द्वानी में कांग्रेस की रैली स्थल के कथित शुद्धिकरण की घटना के विरोध में छत्तीसगढ़ कांग्रेस ने 14 अगस्त की शाम प्रदेशभर में जिला स्तरीय मार्च और सत्याग्रह किया।

जिला, शहर, नगर और ब्लॉक कांग्रेस कमेटियों के साथ मोर्चा संगठनों और प्रकोष्ठ-विभागों ने इसमें हिस्सा लिया। वहीं, रायपुर में जिला कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में कार्यकर्ता राजीव चौक से अंबेडकर चौक तक पैदल पहुंचे। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी मार्च में शामिल हुए। इस दौरान भूपेश बघेल ने केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा। उन्होंने एक राजा की कहानी सुनाते हुए कहा कि अब बच्चों में ED, IT और CBI का डर नहीं है। भूपेश बघेल ने प्रदेश में नशे के मुद्दे पर भी सरकार पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा नशा CM हाउस और राजभवन के आसपास है। उन्होंने वहां नशा मुक्ति केंद्र खोलने की बात कही।

110 आवारा मवेशी लेकर कलेक्टोरेट पहुंचे 40 किसान

शहर सत्ता/रायपुर। शहर में आवारा मवेशियों की समस्या का समाधान नहीं निकला तो परसाभकुरा के किसानों ने गुरुवार को ऐसा रास्ता चुना, जिसे देखकर अफसर भी हैरान रह गए। 40 किसान करीब 110 से अधिक मवेशियों को 15 किमी दूर से हांकते हुए सीधे कलेक्टोरेट पहुंच गए और कलेक्टर दफ्तर के बाहर खड़ा कर दिया। यानी जिस समस्या की शिकायत किसान महीनों से कर रहे थे, उसे इस बार उन्होंने सीधे प्रशासन के दरवाजे पर पहुंचा दिया। दोपहर 12 बजे अचानक इतने मवेशियों के पहुंचते ही कलेक्टोरेट परिसर में अफरा-तफरी मच गई। कई घंटे तक अफसर ग्रामीणों को समझाइश देते रहे, लेकिन ग्रामीण फसलों को नुकसान होने की बात पर पहल नहीं करने को लेकर मजबूरीवश ऐसा कदम उठाने की बात कहते रहे।

पद्मश्री 'अनूप' नाम एक सम्मान अनेक संगीत नाटक अकादमी से नवाज़े गए

लोककला की चार दशक लंबी साधना को राष्ट्रीय सम्मान

शहर सत्ता/रायपुर। छत्तीसगढ़ के जाने-माने संस्कृतिकर्मी और पद्मश्री से सम्मानित अनूप रंजन पांडेय को गुरुवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया। नई दिल्ली में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति ने देशभर के विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों को सम्मान प्रदान किया। सम्मान प्राप्त करने के बाद अनूप रंजन पांडेय ने इसे छत्तीसगढ़ के आदिवासी कलाकारों और प्रदेश की जनता को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि भर नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की लोक एवं आदिवासी कला-संस्कृति से जुड़े हजारों कलाकारों की साधना का सम्मान है।समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि सम्मानित कलाकार मिलकर भारत का ऐसा सांस्कृतिक मानचित्र प्रस्तुत करते हैं, जिसमें देश की मिट्टी की कथाएं और गीत, विविध नृत्य और उत्सव तथा सदियों से विकसित भाषाओं और बोलियों की स्मृतियां समाहित हैं।

राष्ट्रपति ने गुरु-शिष्य परंपरा को भारतीय कला परंपरा की महत्वपूर्ण आधारशिला बताते हुए कहा कि हमारी कलाओं की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक जीवंत गुरु होते हैं। उन्होंने लोक और जनजातीय कलाओं के संरक्षण की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि तेजी से बदलते समय में अनेक लोककलाएं विलुप्ति के संकट से गुजर रही हैं। इसलिए उनके दस्तावेजीकरण के साथ उन्हें जीवंत बनाए रखने के लिए विशेष प्रयास जरूरी हैं।

चार दशक की सांस्कृतिक साधना, 3000 से अधिक नुक्कड़ नाटक

21 जुलाई 1965 को बिलासपुर में जन्मे और जांजगीर-चांपा जिले के ग्राम कोसा निवासी अनूप रंजन पांडेय ने लोक संगीत, अभिनय और निर्देशन के क्षेत्र में चार दशक से अधिक समय तक काम किया है। संगीत, साहित्य और संस्कृति की प्रारंभिक शिक्षा उन्हें अपनी माता एवं गुरु भजन गायिका स्व. मनोरमा पाण्डेय तथा पिता एवं गुरु, शिक्षाविद और संस्कृत के विद्वान स्व. राधेश्याम पाण्डेय से मिली।

गांव में होने वाले नाचा और कृष्ण की बाल लीलाओं पर आधारित रहस लोकनाट्य से प्रभावित पांडेय ने महज नौ वर्ष की उम्र में रेलवे स्कूल, बिलासपुर के मंच से अपनी पहली औपचारिक प्रस्तुति दी। बाद में बड़े भाई और अभिनेता रहे इंजीनियर आलोक रंजन पाण्डेय से अभिनय की बारीकियां सीखीं।1990 का दशक उनके सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण रहा। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के तहत उन्होंने गांव-गांव जाकर नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जनजागरूकता अभियान चलाया। महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण, जनस्वास्थ्य और साक्षरता जैसे विषयों पर 3000 से अधिक नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन किया।

करेंगुट्टा पहुंची बस्तर तिरंगा यात्रा, उप मुख्यमंत्री ने फहराया तिरंगा

रायपुर। बस्तर तिरंगा यात्रा के तीसरे दिन उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, वन मंत्री केदार कश्यप, सांसद महेश कश्यप एक बार फिर उसी जोश के साथ शुरुआत की। बीजापुर से निकल कर आवापल्ली, गलगम, उसूर, नम्बी, ताड़पाला होते हुए अपनी 600 किमी की यात्रा का समापन करेंगुट्टा की पहाड़ी पर झंडा फहराकर किया। मंत्री द्वय ने 3 दिनों में नारायणपुर, कोंडागांव, सुकमा, दंतेवाड़ा, बीजापुर इन 5 जिलों में लगभग 600 किमी की तिरंगा यात्रा बाइक से पूर्ण की।

यात्रा के अंतिम दिन करेगुट्टा की पहाड़ी पर जवानों से मिलकर उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा व केबिनेट मंत्री केदार कश्यप ने शहीदों की याद में वृक्षारोपण किया उसके बाद स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या में ध्वजारोहण किया। आज वह सपना पूरा हुआ जो हमने देखा था। आज बस्तर की जनता जीत गई, यहां के लोग जीत गए, एर्राबोर की कट्टम ज्योति जीत गई शहीद जवानों का अदम्य पराक्रम जीत गया और नक्सली हार गए। बस्तर की धरती पर नक्सलवाद के सफाए का संकल्प साकार हो रहा है। यह उप मुख्यमंत्री ने करेंगुट्टा पहाड़ी पर झंडा फहराकर यह बातें जवानों से कही। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा की यह मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन है मैं नक्सलियों के सबसे सुरक्षित गढ़ रहे स्थान में आप के सानिध्य में झंडा फहरा रहा हु। लोग कहते है मंत्री जी सैनिकों का मनोबल बढ़ाने कैम्प जाते है। वास्तविकता यह है कि मै तो आप से ऊर्जा प्राप्त करने आता हूं। उन्होंने कहा कि जवानों किं हिम्मत को सम्मानित करते हुए केंद्र सरकार ने छत्तीसगढ़ के 141 पुलिस जवानों को विशिष्ठ सेवा व सरहनीय सेवा पदक से सम्मानित किया है।

छत्तीसगढ़ पुलिस के नाम 152 पदक सुंदरराज-एलेसेला होंगे सम्मानित

- IPS कोटवानी को मिलेगा राष्ट्रपति पदक

शहर सत्ता/रायपुर। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पुलिस पदकों की घोषणा की है। इस बार छत्तीसगढ़ पुलिस के 152 अधिकारी और जवान अलग-अलग श्रेणियों में सम्मानित होंगे। इनमें 141 को वीरता पदक, 10 को सराहनीय सेवा पदक और 1 अधिकारी को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पदक दिया जाएगा।

बता दें कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वीरता और अदम्य साहस का परिचय देने वाले सेना के जवानों, अफसरों और पुलिस अधिकारियों और जवानों को अवार्ड से सम्मानित किया जाता है। नक्सल प्रभावित इलाकों में लंबे समय तक चले अभियानों में अहम भूमिका निभाने वाले अधिकारियों को इस बार खास तौर पर सम्मानित किया गया है। वीरता पदक पाने वाले प्रमुख अधिकारियों में आईजी पी. सुंदरराज, आईजी इंदिरा कल्याण एलेसेला, एएसपी संदीप पटेल और एएसपी रॉबिन्सन गुड़िया शामिल हैं। आईजी पी. सुंदरराज को नक्सल विरोधी अभियानों का बेहतर तरीके से नेतृत्व करने और माओवादी नेटवर्क को कमजोर करने के लिए किए गए काम के लिए वीरता पदक दिया गया है।

छत्तीसगढ़िया वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ की कार्यकारिणी ने ली शपथ

शहर सत्ता/रायपुर। छत्तीसगढ़िया वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ के 13वें स्थापना दिवस के अवसर पर वर्ष 2026-2029 की प्रदेश कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह रायपुर के होटल ग्रैंड राजपुताना में आयोजित किया गया। समारोह में नवनियुक्त पदाधिकारियों ने व्यापारियों और उद्योगों के हित में एकजुट होकर काम करने तथा संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लिया। नई कार्यकारिणी में शेखर वर्मा को प्रदेश अध्यक्ष, कुबेर चंद्राकर को महासचिव और ललित साहू को कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई। वहीं मोहन चंद्राकर, दिलीप टिकरिया, माशीष साहू, ईश्वर पटेल और पुनारद निषाद को उपाध्यक्ष बनाया गया। प्रदेश कार्यकारिणी सदस्यों में टीकम सिंह ठाकुर, देवेंद्र संभाकर, रामशरण टंडन, घनश्याम सिन्हा, गोविंद यादव, नोहर साहू, नागेश वर्मा, रवि वर्मा, पारस पटेल, डॉ. अखिलेश साहू और यश साहू शामिल हैं। समारोह में महासंघ के संस्थापक सदस्य सुंदर लहरे, डॉ. अजय यादव, डॉ. निर्मल नायक और दीपेंद्र राठौर मौजूद रहे।

रायपुर में सरेंडर नक्सली महिलाओं ने किया रैंप वॉक

स्वदेशी एक्सपो में कोसा सिल्क पहनकर उतरीं, हिंसा का रास्ता छोड़ा

रायपुर। एक कार्यक्रम में सरेंडर नक्सली महिलाओं ने रैंप वॉक किया। राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर प्रदेश स्तरीय बुनकर सम्मेलन और स्वदेशी एक्सपो आयोजित किया गया था। जहां पूर्व महिला नक्सलियों ने कोसा साड़ी पहनकर हैंडलूम कपड़ों का प्रदर्शन किया। यह फैशन शो सिर्फ पारंपरिक परिधानों का प्रदर्शन नहीं था, बल्कि बदलते बस्तर और मुख्यधारा से जुड़कर नई जिंदगी शुरू कर रही महिलाओं की प्रेरक कहानी भी सामने लेकर आया। कभी बंदूक और हिंसा के साए में जीवन बिताने वाली इन महिलाओं ने आत्मविश्वास के साथ रैंप पर कदम रखा।

रैंप वॉक के जरिए दिया संदेश

स्वदेशी फैशन शो में आत्मसमर्पित महिलाओं ने पूरे आत्मविश्वास के साथ रैंप वॉक किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ की पारंपरिक बुनाई और कोसा सिल्क से तैयार आकर्षक परिधानों को प्रदर्शित किया। सरेंडर नक्सलियों ने रैंप वॉक के जरिए यह संदेश देने का प्रयास किया कि हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्यधारा में लौटने के बाद सम्मानजनक और आत्मनिर्भर जीवन की नई शुरुआत संभव है।

सभी महिलाएं पहली बार रायपुर पहुंची

कार्यक्रम की खास बात यह रही कि रैंप वॉक करने वाली लगभग सभी महिलाएं पहली बार रायपुर पहुंची थीं। उनके लिए यह अनुभव बेहद खास और यादगार रहा। पारंपरिक परिधानों में रैंप पर चलती महिलाओं के चेहरे पर आत्मविश्वास और उत्साह साफ नजर आया। कार्यक्रम में शामिल हुए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भी आत्मसमर्पित महिलाओं से आत्मीय संवाद किया और उनका उत्साह बढ़ाया। उन्होंने महिलाओं को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

मुख्यधारा में लौट रहे लोगों के लिए शो

यह फैशन शो सरकार की पुनर्वास नीति के तहत मुख्यधारा में लौट रहे लोगों के सम्मान, आत्मनिर्भरता और नए अवसरों की दिशा में सकारात्मक संदेश के रूप में सामने आया। राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के कोसा और पारंपरिक हथकरघा उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाने पर भी जोर दिया गया। इसी अवसर पर मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ के प्रीमियम हैंडलूम ब्रांड 'कोशल फैब' का शुभारंभ किया।

रैंप वॉक पर दिखी हथकरघा परंपरा की झलक

रैंप पर कोसा सिल्क पहनकर उतरीं आत्मसमर्पित महिलाओं ने एक तरफ छत्तीसगढ़ की समृद्ध हथकरघा परंपरा की झलक दिखाई, वहीं दूसरी ओर बदलते बस्तर की ऐसी तस्वीर पेश की, जिसमें बंदूक की जगह हुनर और हिंसा की जगह आत्मनिर्भरता नजर आई। 'लोकल टू ग्लोबल' की ओर बढ़ते छत्तीसगढ़ में इन महिलाओं की मौजूदगी ने यह संदेश भी दिया कि पुनर्वास और अवसर मिलने पर वे अपनी नई पहचान बनाएंगी।

94 उम्रकैदी हुए रिहा:बिलासपुर से सबसे ज्यादा 29 और रायपुर से 23 कैदी आजाद

स्वतंत्रता दिवस के बाद सात और कैदी छूटेंगे

रायपुर। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर छत्तीसगढ़ की पांच केंद्रीय जेलों में उम्रकैद की सजा काट रहे 101 बंदियों को समय से पहले रिहाई दे दी गई है। जेल डीजी हिमांशु गुप्ता ने बताया के आंकड़ों के मुताबिक, 13 और 14 अगस्त को 94 बंदी जेल से बाहर आए, जबकि बाकी 7 बंदियों की रिहाई 17 और 18 अगस्त को होगी। रिहाई अच्छे आचरण और जेल में व्यवहार के आधार पर तय प्रक्रिया के तहत की जा रही है। जेलवार आंकड़ों के मुताबिक सबसे ज्यादा 29 बंदी केंद्रीय जेल बिलासपुर से रिहा हुए। इनमें 13 अगस्त को 14 और 14 अगस्त को 15 बंदी बाहर आए।

इसके बाद रायपुर केंद्रीय जेल से 23 बंदियों को रिहा किया गया। इनमें 13 अगस्त को 9 और 14 अगस्त को 14 बंदी शामिल हैं। वहीं, दुर्ग केंद्रीय जेल से 21 बंदियों की रिहाई हुई। इनमें 13 अगस्त को 13 और 14 अगस्त को 8 बंदी रिहा हुए। अंबिकापुर केंद्रीय जेल से 16 बंदी रिहा हुए। इनमें 13 और 14 अगस्त को 8-8 बंदी जेल से बाहर आए। वहीं, जगदलपुर केंद्रीय जेल से 13 अगस्त को 5 बंदियों की रिहाई हुई। 14 अगस्त को यहां किसी बंदी को रिहा नहीं किया गया।

7 बंदियों की रिहाई बाद में

13 और 14 अगस्त के बाद 17 और 18 अगस्त को भी बंदियों की रिहाई होगी। इन दो दिनों में 7 और बंदियों को रिहा किया जाना है। इस तरह पूरी प्रक्रिया में पांचों केंद्रीय जेलों से समय-पूर्व रिहा होने वाले बंदियों की कुल संख्या 101 होगी।

बिलासपुर में सबसे ज्यादा, जगदलपुर में सबसे कम

पूरे आंकड़ों को देखें तो 101 में से करीब 29% बंदी अकेले बिलासपुर केंद्रीय जेल से हैं। रायपुर से करीब 23%, दुर्ग से 21%, अंबिकापुर से 16% और जगदलपुर से करीब 5% बंदी रिहा किए जा रहे हैं। 13 और 14 अगस्त की रिहाई को देखें तो 94 बंदियों में बिलासपुर की हिस्सेदारी सबसे ज्यादा है। इन दो दिनों में बिलासपुर से 29, रायपुर से 23, दुर्ग से 21, अंबिकापुर से 16 और जगदलपुर से 5 बंदी रिहा हुए।

संपादकीय

• सुकांत राजपूत

स्वतंत्रता का अमृत जिम्मेदारी का संकल्प

15 अगस्त 2026 को भारत अपनी स्वतंत्रता की 80वीं वर्षगांठ मना रहा है। यह अवसर केवल तिरंगा फहराने और राष्ट्रगान गाने का नहीं, बल्कि उन असंख्य बलिदानों को स्मरण करने का है, जिनकी कीमत पर हमें स्वतंत्र भारत मिला। आजादी के आठ दशकों में देश ने लोकतंत्र, विज्ञान, तकनीक, कृषि, अंतरिक्ष और अर्थव्यवस्था सहित अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है।

लेकिन स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं है। स्वतंत्रता तब सार्थक होगी, जब देश का प्रत्येक नागरिक सम्मान, अवसर और न्याय के साथ जीवन जी सके। आज भारत दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में अपनी मजबूत पहचान बना रहा है, डिजिटल क्रांति गांवों तक पहुंच रही है और युवा नई संभावनाओं के द्वार खोल रहे हैं। फिर भी गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी चुनौतियां हमारे सामने मौजूद हैं।

आज जरूरत इस बात की है कि विकास की गति के साथ उसकी पहुंच भी व्यापक हो। शहरों के साथ गांवों, आदिवासी क्षेत्रों और पिछड़े इलाकों को भी समान अवसर मिलें। तकनीक केवल सुविधा का माध्यम न बने, बल्कि शिक्षा, रोजगार और सामाजिक सशक्तीकरण का साधन बने।

स्वतंत्रता हमें अधिकार देती है, लेकिन उसके साथ जिम्मेदारियां भी जोड़ती है। संविधान, लोकतांत्रिक संस्थाओं और सामाजिक सद्भाव के प्रति हमारी प्रतिबद्धता ही राष्ट्र की असली शक्ति है। मतभेद लोकतंत्र की स्वाभाविक खूबसूरती हैं, लेकिन नफरत और विभाजन उसकी आत्मा को कमजोर करते हैं।80 वर्षों की यात्रा हमें गर्व देती है, लेकिन अगले भारत की तस्वीर हमारे आज के फैसले तय करेंगे। आइए, इस स्वतंत्रता दिवस पर हम केवल उपलब्धियों का उत्सव न मनाएं, बल्कि एक ऐसे भारत के निर्माण का संकल्प लें जो समृद्ध होने के साथ संवेदनशील, न्यायपूर्ण, आत्मनिर्भर और सभी के लिए अवसरों से भरा हो।

यही स्वतंत्रता का सच्चा उत्सव होगा।

असंभव कुछ भी नहीं

अंधेरी रात के सन्नाटे में एक नन्हा दीया मिट्टी की दीवार पर उदास बैठा था। बाहर तेज़ आंधी चल रही थी। विशाल पेड़ उखड़ रहे थे, लोहे के बड़े-बड़े शेड उड़ रहे थे। दीये ने खुद से कहा, "इतने बड़े तूफ़ान के सामने मेरी छोटी सी लौ की क्या बिसात? मैं तो पल भर में बुझ जाऊँगा।"

पास ही पड़े एक बूढ़े चराग़ ने मुस्कुराते हुए कहा, "बेटा, तुम्हारा काम पूरे जंगल को रोशन करना नहीं है। तुम्हारा काम बस उतनी जगह को जगमगाना है, जहाँ तुम खड़े हो। बाकी की चिंता छोड़ो और अपनी लौ को संभालो।"

दीये को बात समझ आ गई। उसने डरना छोड़ दिया। उसने अपनी पूरी ताकत अपनी छोटी सी लौ को बचाए रखने में लगा दी। हवा का झोंका आता, दीया थोड़ा थिलमिलाता, लेकिन अपनी जगह पर डटा रहता।

रात भर तूफ़ान तांडव मचाता रहा। सुबह जब सूरज निकला, तो पूरा गाँव तबाही के निशानों से भरा था। बड़े-बड़े महारथी पेड़ ज़मीन पर पड़े थे, लेकिन मिट्टी की उस दीवार पर वह छोटा सा दीया अब भी जल रहा था।

सीख: परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विपरीत हों, अगर आप अपनी क्षमता पर विश्वास रखकर डटे रहते हैं, तो दुनिया की कोई भी आंधी आपको बुझा नहीं सकती। आपकी छोटी सी कोशिश भी बड़े तूफ़ान को हराने का दम रखती है।

स्वतंत्र भारत के मशालवाहक

सी. पी. राधाकृष्णन
उपराष्ट्रपति, भारत

भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के इस महत्वपूर्ण अवसर पर मैं प्रत्येक भारतवासी को हार्दिक बधाई देता हूं। साथ ही, मैं उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों को सादर नमन करता हूं, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

पिछले सप्ताह अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की अपनी यात्रा के दौरान मुझे हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत हमारे राष्ट्रीय ध्वज फहराने तथा महान देशभक्त नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी द्वारा तिरंगा फहराए जाने की ऐतिहासिक स्मृति को नमन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मेरे लिए अत्यंत भावुक और गौरवपूर्ण अनुभव था कि मैं उस पवित्र धरती पर खड़ा था, जहां श्री नेताजी की आज़ाद हिंद फ़ौज ने 30 दिसंबर 1943 को भारत की भूमि पर पहली बार तिरंगा फहराया था। इस अवसर ने मुझे सितंबर 1939 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की मदुरै यात्रा का भी स्मरण कराया, जब वे महान स्वतंत्रता सेनानी पसुम्पोन मुथुरामलिंगा थेवर जी के निमंत्रण पर वहां पहुंचे थे। उस ऐतिहासिक क्षण ने क्षेत्र के असंख्य देशभक्तों के हृदय में स्वतंत्रता की अलख जगाई।

अंडमान स्थित राष्ट्रीय स्मारक सेल्युलर जेल की मेरी यात्रा एक अन्य अत्यंत प्रेरणादायी क्षण रही। इसी जेल में भारत माता के महान सपूत श्री वीर सावरकर जी, श्री योगेंद्र शुक्ल जी, श्री बटुकेश्वर दत्त जी, श्री सचिंद्र नाथ सान्याल जी और अनेक अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा कैद कर एकांत कारावास में रखा गया था। आज भी राष्ट्रीय स्मारक की ये दीवारें उन वीरों के साहस, उन्हें दी गई यातनाओं और सर्वोच्च बलिदान की गाथाएं सुनाती प्रतीत होती हैं, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता और सम्मान के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। इस यात्रा ने मुझे उन सभी राष्ट्रनायकों के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप यह लेख लिखने को प्रेरित किया, जिन्होंने करोड़ों लोगों के हृदय में देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित की और राष्ट्र को स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ाया।

9 अगस्त को, जब हम भारत छोड़ो आंदोलन की स्मृति मना रहे थे, मुझे अंडमान द्वीप समूह में हर घर तिरंगा अभियान का शुभारंभ करने का अवसर प्राप्त हुआ। वर्ष 1942 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान करते हुए राष्ट्र को करो या मरो का ओजस्वी नारा दिया था। इस आह्वान के परिणामस्वरूप पूरे देश में आजादी प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा व्याप्त हो गई।

आज हमें उसी स्वतंत्रता सेनानी पीढ़ी के कारण स्वतंत्रता की हवा में सांस लेने और लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत संवैधानिक अधिकारों के साथ जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त है, जिन्होंने अपने समय की औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष किया। उस समय देश के कोने-कोने में करोड़ों वीर स्वतंत्रता सेनानी अटूट समर्पण और त्याग के साथ इस संघर्ष में शामिल हुए तथा अनेक वीरों ने भारत माता की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

स्वतंत्रता सेनानियों की गौरवगाथा

स्वतंत्रता सेनानी चाहे उत्तर में कश्मीर से हों या दक्षिण में तमिलनाडु से, पश्चिम में गुजरात से हों या पूर्व में असम से—देश के सभी क्षेत्रों, वर्गों, आयु समूहों और लिंगों के लोगों ने भारत माता की स्वतंत्रता के साझा लक्ष्य के लिए एकजुट होकर संघर्ष किया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रतिरोध की अमर प्रतीक बनीं रानी लक्ष्मीबाई जी का शौर्य, मंगल पांडे जी का साहस और बाल गंगाधर तिलक जी का वह निर्भीक उद्घोष—स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा—स्वतंत्रता की ओर बढ़ते राष्ट्र के प्रत्येक कदम को शक्ति प्रदान करता रहा।

इसी क्रम में वी. ओ. चिदंबरम पिल्लै जी ने भारत का पहला स्वदेशी पोत-परिवहन उद्यम शुरू कर औपनिवेशिक शासन के आर्थिक प्रभुत्व को चुनौती दी। इससे यह सिद्ध हुआ कि स्वतंत्रता का संघर्ष केवल रणभूमि तक सीमित नहीं था, बल्कि आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र में भी लड़ा गया था। भगत सिंह जी, राजगुरु जी और सुखदेव जी की क्रांतिकारी भावना ने आने वाली पीढ़ियों को स्वतंत्रता के लिए त्याग और बलिदान का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। वहीं रानी गैदिनल्यू जी की अदम्य भावना ने पूर्वोत्तर भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध की लौ प्रज्वलित रखी।

असम की युवा वीरांगना कनकलता बरुआ जी भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व करते हुए अपने हाथों में राष्ट्रीय ध्वज लेकर अदम्य साहस के साथ आगे बढ़ीं और अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। भगवान बिरसा मुंडा जी तथा अनेक जनजातीय नेताओं ने भी औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध ऐतिहासिक प्रतिरोध का नेतृत्व किया। इतिहास के पन्नों में ऐसी असंख्य गाथाएं हैं, जो साहस, संघर्ष, धैर्य और दृढ़ संकल्प से भरी हुई हैं। इन सभी गाथाओं ने मिलकर साहस और बलिदान की समृद्ध विरासत का निर्माण किया है। वे हमें याद दिलाती हैं कि भारत की स्वतंत्रता अनगिनत वीरों के सामूहिक संकल्प

से प्राप्त हुई थी और उनकी विरासत आज भी पीढ़ियों को प्रेरित करती है।

स्वतंत्रता आंदोलन में तिरुप्पुर का योगदान

इस स्वतंत्रता दिवस पर मैं तिरुप्पुर कुमारन जी को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं, जिन्हें लोकप्रिय रूप से कोडी काथा कुमारन अर्थात ध्वज की रक्षा करने वाले कुमारन के नाम से जाना जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मेरे पैतृक स्थान तिरुप्पुर में उन्होंने आजादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। मृत्यु निकट जानते हुए भी उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज को धरती पर नहीं गिरने दिया। इसी कारण उन्हें यह सम्मानजनक उपाधि मिली। कम उम्र में ही कुमारन जी के हृदय में देशभक्ति की लौ प्रज्वलित हो उठी थी। स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है के आह्वान से प्रेरित होकर वे स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए। महात्मा गांधी जी के आदर्शों से अत्यंत प्रभावित होकर कुमारन जी ने लोगों, विशेषकर युवाओं में राष्ट्रवाद की भावना जगाने के लिए देशबंधु युवा संघ की स्थापना की। कुमारन जी का दृढ़ विश्वास था कि सच्ची स्वतंत्रता तभी प्राप्त की जा सकती है, जब लोग औपनिवेशिक शासन के अन्याय के प्रति जागरूक हों और उसके विरुद्ध संघर्ष करने का साहस तथा स्पष्ट दृष्टि विकसित करें।

गांधीवादी सामाजिक सुधार के सिद्धांतों के प्रति समर्पित कुमारन जी ने मद्यनिषेध अभियान को भी सक्रिय रूप से आगे बढ़ाया। वे इसे सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की दिशा में आवश्यक कदम मानते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने ताड़ी की दुकानों के सामने विरोध प्रदर्शन में भाग लिया और लोगों को मद्यपान से दूर रहने तथा आत्म-अनुशासन अपनाने के लिए प्रेरित किया। 10 जनवरी 1932 को सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान कुमारन जी ने एक जुलूस का नेतृत्व किया। हाथों में राष्ट्रीय ध्वज थामे वे कुछ साहसी साथियों के साथ आगे बढ़े और तिरुप्पुर की सड़कों पर वंदे मातरम् के जोशीले नारे गूंज उठे।

औपनिवेशिक शक्तियों ने इस समूह पर हमला कर दिया। वंदे मातरम् का उद्घोष करते हुए और राष्ट्रीय ध्वज को अपने शरीर से लगाए कुमारन जी के सिर पर गंभीर चोटें आईं और राष्ट्र के लिए उन्होंने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। मृत्यु के समय उनकी आयु मात्र 27 वर्ष थी। जब मैं तिरुप्पुर कुमारन जी की आयु का उल्लेख करता हूं, तो मुझे उन अनेक युवाओं की याद आती है, जिन्होंने भारत माता के लिए अपने प्राण बलिदान कर दिए। इनमें भगत सिंह जी (23 वर्ष), सुखदेव जी (23 वर्ष), राजगुरु जी (22 वर्ष), खुदीराम बोस जी (18 वर्ष), कनकलता बरुआ जी (18 वर्ष), अनंत लक्ष्मण कान्हेरे जी (19 वर्ष), वंचिनाथन जी (25 वर्ष) और ऐसे अनेक युवा शामिल हैं। उन्होंने नश्वर जीवन त्याग कर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में अमर स्थान प्राप्त किया।

मैं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की उस पहल की सराहना करता हूं, जिससे राष्ट्रीय आंदोलन के उन गुमनाम नायकों को देश के सामने लाया जा रहा है, जिनका योगदान लंबे समय तक इतिहास के पन्नों में अपेक्षाकृत अनदेखा रहा। मैं सभी ज्ञात और अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इस ऐतिहासिक अवसर पर आइए, हम अपनी मातृभूमि के प्रति अपने दायित्वों पर चिंतन करें और अपनी प्रतिबद्धता पुनः दृढ़ करें। इस अमृतकाल में 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के स्वयं को समर्पित करें और राष्ट्र की प्रगति तथा समृद्धि के लिए मिलकर कार्य करें। यही उन वीर सपूतों के प्रति हमारी सबसे सच्ची और उचित श्रद्धांजलि होगी, जिन्होंने अटूट साहस के साथ संघर्ष किया और हमारी स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण उत्सर्ग किए।

जय हिंद!

भारत माता अमर रहे!

भविष्य को सशक्त बनाना है

सेमीकंडक्टर आधुनिक तकनीक की नींव हैं, जो स्मार्टफोन और गाड़ियों से लेकर सैटेलाइट और एआई सिस्टम तक हर चीज़ को चलाते हैं। एआई अब एडवांस्ड चिप्स, खास प्रोसेसर और हाई-परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग की मांग को बढ़ा रहा है, जिससे ये दोनों तकनीक एक-दूसरे से गहराई से जुड़ गई हैं। इसी जुड़ाव को समझते हुए, भारत चिप डिज़ाइन और विनिर्माण से लेकर कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और स्वदेशी एआई मॉडल तक अपनी क्षमताएं विकसित कर रहा है। सरकार द्वारा की जा रही पहलें दोनों क्षेत्रों में एक ऐसी एकीकृत तकनीक व्यवस्था बना रही हैं, जो आत्मनिर्भरता, आपूर्ति श्रृंखला की मजबूती और नवाचार को बढ़ावा देता है। यह जुड़ाव आधुनिक विनिर्माण, शोध, उद्यमिता और उच्च मूल्य वाले रोज़गार के नए अवसर भी खोल रहा है। जब भारत अपना 80वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है, तो ये क्षमताएं वैश्विक तकनीक नेतृत्व और विकसित भारत की दिशा में एक निर्णायक कदम हैं।

सेमीकंडक्टर: तकनीकी आत्मनिर्भरता की नींव

भारत सेमीकंडक्टर मूल्य श्रृंखला में घरेलू क्षमताएं विकसित कर रहा है, इसमें चिप डिज़ाइन और फैब्रिकेशन से लेकर उन्नत पैकेजिंग, उपकरण और सामग्री तक सब कुछ शामिल है। आज घरेलू क्षमताओं को मजबूत करके, भारत भविष्य की तकनीकों को आकार देने की स्थिति में आ रहा है।

एक समर्पित मिशन ने आत्मनिर्भरता की नींव रखी

सेमीकॉन 1.0 ने भारत के सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को बनाने के लिए ₹76,000 करोड़ के बजट के साथ नींव रखी। यह पूरी मूल्य श्रृंखला को मदद करता है, जिसमें चिप डिज़ाइन, फैब्रिकेशन, पैकेजिंग, टेस्टिंग, उपकरण, सामग्री और कुशल प्रतिभाएं शामिल हैं। सेमीकॉन 2.0 इस नींव को वैश्विक व्यवस्था के नेतृत्व में बदल रहा है और इसके लिए जुलाई 2026 में ₹1,27,500 करोड़ के बजट को मंज़ूरी दी गई। सेमीकॉन इंडिया 2.0 छह रणनीतिक स्तंभों पर आधारित है: चिप डिज़ाइन, मशीनें और सामग्री, फैब्स, ATMP/OSAT, शोध और विकास और प्रतिभा यह एकीकृत दृष्टिकोण आपूर्ति श्रृंखला की मजबूती बढ़ाता है, घरेलू मूल्यवर्धन को विस्तारित करता है और भारत को भविष्य में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में अग्रणी स्थान दिलाता है।

नीति से सेमीकंडक्टर निर्माण तक

- छह राज्यों में 12 सेमीकंडक्टर परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, जिनमें ₹1.64 लाख करोड़ से अधिक का निवेश शामिल है।
- परियोजनाओं में सिलिकॉन और कंपाउंड सेमीकंडक्टर फैब्स, डिस्प्ले फैब्रिकेशन और उन्नत पैकेजिंग सुविधाएं शामिल हैं।
- तीन सुविधाओं में पहले ही वाणिज्यिक उत्पादन शुरू हो चुका है, जो सेमीकंडक्टर नीति से विनिर्माण की ओर भारत के बदलाव का संकेत है।
- सेमीकंडक्टर सुविधाएं ऑटोमोबाइल, दूरसंचार, एयरोस्पेस, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए महत्वपूर्ण घटकों की आपूर्ति करेंगी
- सेमीकंडक्टर फैब्स संयंत्र कच्चे सिलिकॉन वेफर्स को कार्यशील एकीकृत सर्किट और माइक्रोचिप्स में परिवर्तित करते हैं।
- डिस्प्ले फैब्रिकेशन संयंत्र फोन, कारों और गैजेट्स आदि के लिए फ्लैट और फ्लेक्सिबल स्क्रीन बनाते हैं।
- उन्नत पैकेजिंग विधियां संवेदनशील चिप्स को कवर, वायर और शील्ड करती हैं, ताकि वे तेजी से काम कर सकें और लंबे समय तक चल सकें।

IndiaAI मिशन: भारत की अपनी और समग्र एआई व्यवस्था का निर्माण

लगभग ₹10,372 करोड़ के परिव्यय के साथ स्वीकृत इंडियाAI मिशन ने पिछले एक वर्ष में महत्वपूर्ण प्रगति की है। मिशन का उद्देश्य ऐसी क्षमताओं का निर्माण करना है, जो सुरक्षित, समावेशी और भारतीय आवश्यकताओं पर आधारित हों। इसका लक्ष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नवाचार, आर्थिक विकास और सार्वजनिक सेवा वितरण के लिए एक रणनीतिक क्षमता बनाना है।

बड़े पैमाने पर सार्वभौम एआई कंप्यूटिंग क्षमता

इंडियाAI मिशन ने जून 2026 तक, साझा कंप्यूटिंग क्षमता को 45,000 से अधिक ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट्स (GPUs) तक बढ़ाया है। अगस्त 2026 तक, 237 परियोजनाओं ने सब्सिडी वाली AI कंप्यूटिंग का लाभ उठाया, जिसमें 93.18 लाख GPU घंटे शामिल हैं। इससे AI मॉडल के विकास, प्रशिक्षण, परीक्षण और अनुसंधान के लिए किफायती उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग उपलब्ध हो रही है। इससे भारतीय शोधकर्ताओं, स्टार्टअप्स और नवोन्मेषकों के लिए उन्नत AI कंप्यूटिंग तक पहुंच आसान हो रही है। जुलाई 2026 तक, एआई कोष में 14,000 से ज़्यादा डेटासेट और 331 एआई मॉडल मौजूद हैं, जो शोधकर्ताओं, डेवलपर्स और अन्वेषकों को एआई समाधान बनाने और उन्हें बड़े स्तर पर लागू करने के लिए ज़रूरी संसाधन उपलब्ध कराते हैं।

प्रयोगशालाओं से वास्तविक दुनिया के शासन तक

अगस्त 2026 तक, IndiaAI पहलों के तहत 62 एआई प्रोटोटाइप विकसित किए गए हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों में 20 एआई समाधान लागू किए गए हैं।

11 राष्ट्रीय स्तर के हैकाथॉन और नवाचार चैलेंज, विचारों से लेकर लागू किए जा सकने वाले समाधानों तक की प्रक्रिया को और आगे बढ़ा रहे हैं।

वैश्विक पहचान

स्टैनफोर्ड ग्लोबल एआई वाइब्रेंसी रिपोर्ट 2025 ने एआई कॉम्पिटिटिवनेस और इकोसिस्टम वाइब्रेंसी में भारत को दुनिया भर में तीसरा स्थान दिया। 2025 में, GitHub AI प्रोजेक्ट्स में भारत दूसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता था, जो इसके डेवलपर और इनोवेशन समुदाय की मज़बूती को दर्शाता है। इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 फरवरी 2026 में आयोजित किया गया था। इसमें 100 से ज़्यादा देशों और 20 अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिधिमंडलों ने हिस्सा लिया और 92 देशों व संगठनों ने घोषणापत्र को अपनाया।

भारतीयों के लिए रूस सबसे अहम पार्टनर पाकिस्तानियों की पहली पसंद चीन

नई दिल्ली। 10 में से 9 पाकिस्तानी भारत को खतरा मानते हैं, ये बात अमेरिकी प्यू रिसर्च सेंटर के सर्वे में सामने आई है। इंडियंस भी अपना सबसे बड़ा दुश्मन पाकिस्तान को ही मानते हैं। सर्वे में कहा गया कि दोनों देशों के लोग पड़ोसी के साथ अच्छे रिश्ते चाहते हैं, लेकिन भरोसे की कमी है। भारत अपना सबसे अहम पार्टनर रूस को मानता है। वहीं, पाकिस्तान ने चीन को अपना सबसे बड़ा सहयोगी देश माना है।

21% भारतीय मुस्लिमों की पाकिस्तान पर पॉजिटिव राय

- प्यू सर्वे के मुताबिक, भारत में पाकिस्तान को लेकर अलग-अलग समुदायों में राय एक जैसी नहीं है। 21% भारतीय मुस्लिमों ने पाकिस्तान के बारे में पॉजिटिव राय जताई। हिंदुओं में यह आंकड़ा 6% रहा।
- खतरे के सवाल पर भी अंतर दिखा। 34% भारतीय मुस्लिमों ने पाकिस्तान को भारत का सबसे बड़ा राजनीतिक खतरा बताया, जबकि हिंदुओं में यह आंकड़ा 57% था।
- सर्वे में पाकिस्तानियों की भारत को लेकर निगेटिव सोच पाकिस्तान के अलग-अलग सामाजिक समूहों में एक जैसी ज्यादा दिखाई दी है।

पहलगाम हमले के बाद रिश्ते ज्यादा बिगड़े

सर्वे में भारत-पाकिस्तान के बीच हालिया तनाव का भी जिक्र है। 22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकियों ने 26 लोगों की हत्या कर दी थी। इसके बाद भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। सर्वे के मुताबिक, इसके बाद दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गया।

भारत सरकार ने 1960 की सिंधु जल संधि को रोकने का फैसला किया। पाकिस्तान की खेती और पानी की जरूरत का एक बड़ा हिस्सा सिंधु नदी पर निर्भर है। पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए इस हमले में 26 लोगों की मौत हो गई थी और 16 लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे।

भारत की विदेश नीति किसी एक देश से नहीं जुड़ी

सर्वे में कहा गया कि भारत की विदेश नीति किसी एक देश को लेकर नहीं है। जबकि, पाकिस्तान में एकतरफा पसंद दिखती है। भारत की विदेश नीति में कई बड़े देशों के साथ एक साथ रिश्ते बनाए रखने की कोशिश दिखाई देती है। भारत अमेरिका के साथ रक्षा, तकनीक और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ा रहा है। रूस के साथ उसके पुराने रक्षा संबंध हैं। चीन के साथ सीमा पर तनाव और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा है, लेकिन दोनों देश कई मुद्दों पर साथ भी काम करते हैं। इसे भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और कई देशों के साथ हितों के हिसाब से रिश्ते बनाने की नीति से जोड़कर देखा जा सकता है। भारत किसी एक बड़े देश के खेमे में पूरी तरह जाने के बजाय अलग-अलग देशों के साथ रिश्ते बनाए रखना चाहता है।

78 वीरता पुरस्कार का ऐलान, राष्ट्रपति ने दी मंजूरी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर 14 अगस्त 2026 (शुक्रवार) की शाम को डिफेंस फोर्सेज और सेंट्रल ऑर्म्ड पुलिस फोर्सेज के जवानों के लिए 78 वीरता पुरस्कार को अवॉर्ड्स की मंजूरी दी है. इसमें 13 मरणोपरांत अवॉर्ड्स शामिल हैं. इनमें 09 कीर्ति चक्र, इनमें, 7 मरणोपरांत अवॉर्ड्स शामिल हैं. इनके अलावा 19 शौर्य चक्र अवॉर्ड्स, इनमें 01 मरणोपरांत अवॉर्ड शामिल हैं. साथ ही 36 सेना के मेडल्स, 5 मरणोपरांत अवॉर्ड्स शामिल हैं. 03 नौसेना मेडल और 5 वायुसेना मेडल्स शामिल हैं. क्रीर्ति चक्कर और शौर्य चक्र प्रमुख सम्मानों में शामिल हैं. 9 कीर्ति चक्रों को मंजूरी दी है. इनमें से सात मरणोपरांत दिए जाने वाले सम्मान हैं. कीर्ति चक्र भारत के शांति काल के प्रमुख वीरता पुरस्कारों में से एक हैं. यह असाधारण बहादुरी के कामों के लिए दिया जाता है. इस लिस्ट में 19 शौर्य चक्रों के साथ-साथ एक बार टू शौर्य चक्र भी शामिल हैं. शौर्य चक्र उन परिस्थितियों में वीरता और साहस के कामों के लिए दिया जाता है, जिनमें दुश्मन से सीधी लड़ाई शामिल नहीं होती है.

सेना मेडल 41 अवॉर्ड्स के साथ लिस्ट में टॉप पर है. कुल 41 सेना मेडल को मंजूरी दी गई है. इनमें सेना के मेडल के लिए पांच बार और 36 सेना मेडल शामिल हैं. 36 सेना मेडल अवॉर्ड्स में से पांच मरणोपरांत दिए जान के लिए मंजूर किए गए हैं. यह अवॉर्ड उन जवानों को अतिरिक्त वीरतापूर्ण कार्यों को मान्यता देता है, जिन्हें पहले ही सेना मेडल से सम्मानित किया जा चुका है. इसके अलावा नौसेना और वायुसेना के जवानों को भी सम्मानित किया गया है. राष्ट्रपति ने भारतीय नौसेना के जवानों के लिए तीन नौसेना मेडल को मंजूरी दी है. भारतीय वायुसेना के जवानों के लिए पांच वायुसेना मेडल को मंजूरी दी गई है. यह भारत की तीनों सशस्त्र सेनाओं के जवानों के योगदान को भी उजागर करता है.

सिंधु जल संधि पर आया भारत का रिएक्शन

नई दिल्ली। पाकिस्तान में भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर के बाद से ही दोनों देशों के बीच सिंधु जल समझौते को लेकर लगातार तकरार की स्थिति बनी हुई है. इस बीच भारत ने एक बार फिर से इसे लेकर अपने पक्ष को दोहराया है और कहा है कि हमारे पक्ष में कोई बदलाव नहीं आया है. विदेश मंत्रालय (MEA) के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार (14 अगस्त, 2026) को प्रेस ब्रीफिंग को संबोधित करते हुए सिंधु जल समझौते पर भारत सरकार के पक्ष को स्पष्ट कर दिया है. उन्होंने कहा, 'सिंधु जल संधि पर हमारा रुख सर्वविदित है. इसमें कोई बदलाव नहीं आया है.' इसके साथ ही, उन्होंने भारत और अफगानिस्तान के बीच रिश्तों को लेकर भी स्थिति को स्पष्ट किया है. रणधीर जायसवाल ने कहा, 'पिछले कुछ महीनों और अब एक साल से भी ज्यादा समय में अफगानिस्तान के साथ हमारी कई स्तरों पर बातचीत और मुलाकातें हुई हैं. इस दौरान अफगानिस्तान के कई मंत्रियों का दौरा भी हुआ है, कई प्रतिनिधिमंडल अब तक भारत आए हैं और इन दौरों से विकास, सहयोग, व्यापार और कनेक्टिविटी के साथ-साथ कई अन्य क्षेत्रों में हमारी साझेदारी मजबूत हुई है.' उन्होंने कहा, 'अफगानिस्तान के साथ हमारे लंबे समय से संबंध रहे हैं और हम उनके साथ अपने इन संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

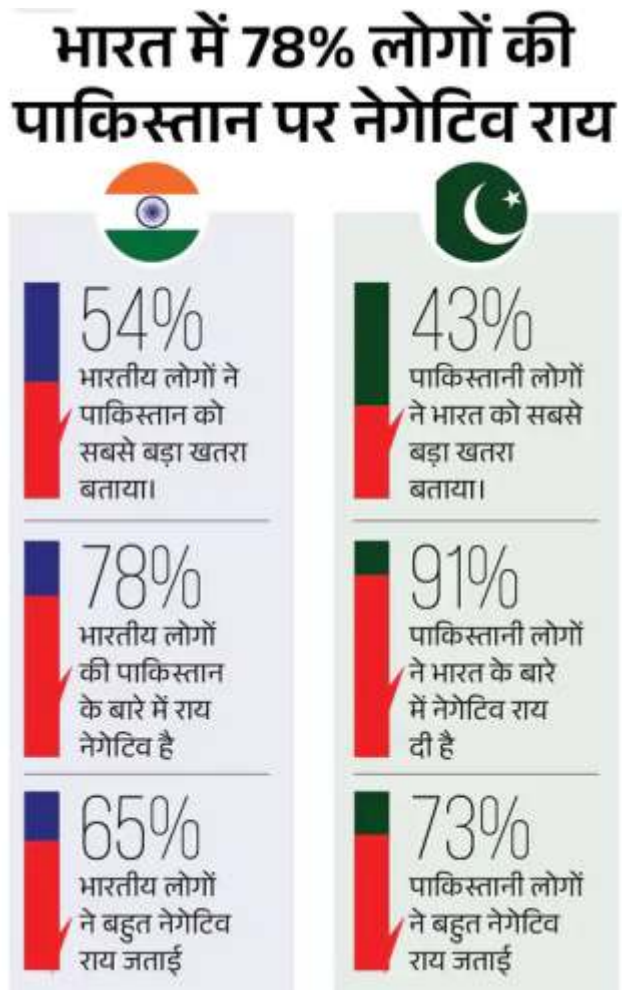

बैंकॉक एयरपोर्ट पर 28 घंटे से फंसे 200 भारतीय

बैंकाक। थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक के एयरपोर्ट पर भारत के 200 लोग गुरुवार शाम से फंसे हैं। वे एअर इंडिया की फ्लाइट से भारत लौट रहे थे, लेकिन तकनीकी खराबी के कारण फ्लाइट रनवे से वापस आ गई। यात्रियों में कई मध्य प्रदेश के भी हैं। उनका कहना है कि एअर इंडिया ने न तो फ्लाइट कैंसिल की और न ही रिफंड किया। एअर इंडिया ने शुक्रवार शाम 7.15 बजे फ्लाइट रवाना होने की बात कही। रात 8 बजे तक फ्लाइट नहीं उड़ी थी। हालांकि बोर्डिंग शुरू हो गई है। इससे पहले कुछ यात्री दूसरी फ्लाइट से भारत लौट आए हैं। यात्रियों ने बताया कि गुरुवार शाम 4 बजे ही एयरपोर्ट पहुंचे थे। 28 घंटे से सिर्फ इंतजार ही कर रहे हैं, लेकिन कोई दूसरी फ्लाइट अरेंज नहीं की जा रही है। एअर इंडिया के किसी भी अधिकारी ने बात नहीं की है। यात्रियों ने बताया कि शुक्रवार को हमने सिर्फ चेक इन और चेक आउट ही किया। छोटे बच्चे और महिलाएं भी हैं।

टीवी चैनलों को बड़ी राहत, सरकार ने हटाई 12 मिनट विज्ञापन की टाइम लिमिट

नई दिल्ली। भारत सरकार ने टेलीविजन चैनलों के लिए एडवरटाइजमेंट की अवधि पर लगी 12 मिनट की समय सीमा को हटाने का फैसला किया है. सरकार ने शुक्रवार को इससे जुड़ा आदेश भी जारी कर दिया है. सरकार ने टेलीविजन के लिए एडवरटाइजमेंट की समय सीमा 2006 में केबल टेलीविजन नेटवर्क नियम 1994 के तहत लागू की थी. उसी वक्त से अबतक टीवी ब्रॉडकास्टिंग सेक्टर में काफी बदलाव आ चुके हैं. 2006 में देश में सिर्फ 62 टीवी चैनल थे. आज देश में कुल 900 चैनल हैं. उस समय टीवी चैनल दिखाने का मुख्य जरिया केबल टीवी था. यह एनालॉग माध्यम था. इसकी क्षमता सीमित थी. इससे कस्टमर्स के पास बहुत कम विकल्प होते थे. अब केबल टीवी सेक्टर पूरी तरह से डिजिटल होने के बाद से डीटीएच, केबल टीवी, HITS और IPTV जैसे टीबी डिस्ट्रीब्यूशन प्लेटफॉर्म डिजिटल हो चुके हैं. ये प्लेटफॉर्म अभी 300 से 500 या उससे ज्यादा चैनल दिखाते हैं. इससे ग्राहकों की अलग-अलग जरूरतें पूरी होती हैं. उन्हें ज्यादा विकल्प मिलते हैं. मार्केट में काफी कॉम्पीटिशन बढ़ चुका है. टीवी ब्रॉडकास्टिंग सेक्टर में आए बदलावों के चलते एडवरटाइजमेंट की टाइमलाइन से जुड़े नियमों पर फिर से विचार करने की जरूरत को महसूस किया गया है.

भारत में टीवी चैनलों का सेक्टर काफी हद एडवरटाइजमेंट पर निर्भर है. चाहे चैनल पे हो या फ्री टू एयर. इसके अलावा ट्रेडिशनल टीवी चैनलों पर डिजिटल मीडिया के बीच बराबरी का माहौल नहीं था, क्योंकि डिजिटल मीडिया पर विज्ञापन की सीमा जैसा कोई नियम नहीं है. सूचना प्रसारण मंत्रालय का कहना है कि टीवी इंडस्ट्री के अंदर और टीवी इंडस्ट्री और डिजिटल मीडिया के बीच मार्केट में काफी कॉम्पिटिशन है।

राष्ट्रपति के देश के नाम संबोधन मे दोहराया विकसित भारत का संकल्प

भावी पीढ़ियों के लिए नहीं होनी चाहिए कोई कमी- राष्ट्रपति

नई दिल्ली। देश की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर शुक्रवार (14 अगस्त, 2026) को देश के नाम अपना संबोधन दिया. अपने संबोधन की शुरुआत राष्ट्रपति मुर्मू ने सभी देशवासियों को राष्ट्रीय पर्व की बधाई देकर की. उन्होंने कहा कि कुछ ही घंटों के बाद हमारे देश की स्वाधीनता के 80वें वर्ष का शुभारंभ होगा और हमारा तिरंगा हमारी स्वाधीनता का प्रतीक है. इस दौरान उन्होंने देश की विदेश नीति, युवा आबादी, शिक्षि महिलाओं समेत कई अन्य विषयों पर अपनी बात रखी है. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा, 'देश की कुल आबादी में 65 प्रतिशत लोगों की आयु 35 वर्ष से कम है. यह युवा आबादी हमारी सबसे मूल्यवान संपदा है. केवल 28 वर्ष की औसत आयु वाली युवा टीम द्वारा हाल ही में रॉकेट का सफल प्रक्षेपण करके अंतरिक्ष अन्वेषण के एक नए चरण का शुभारंभ किया गया है. हमारे देश के युवा टैलेंटेड हैं, कमिटेड हैं और स्किल्ड हैं.

शिक्षा के क्षेत्र में हमारी बेटियां आगे- राष्ट्रपति मुर्मू

उन्होंने कहा, 'मुझे यह देखकर बहुत प्रसन्नता होती है कि शिक्षा के क्षेत्र में हमारी बेटियां प्रभावशाली प्रदर्शन कर रही हैं. महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ रही है. स्वयं सहायता समूहों की 10 करोड़ से अधिक महिला सदस्य हैं. मुद्रा योजना के तहत सहायता प्राप्त करने वाले उद्यमियों में लगभग दो तिहाई लाभार्थी महिलाएं हैं. कृषि उत्पादकता बढ़ाने में योगदान देने वाली ड्रोन दीदी से लेकर वायु सेना में फाइटर कॉम्बैट लीडर बनने तक विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है.'

उन्होंने आगे कहा, '3 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य तय किया गया था. इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा चुका है. अब हमारा देश 3 करोड़ महिलाओं को नई लखपति दीदी बनाने के लक्ष्य की तरफ अग्रसर है.'

भारत की विदेश नीति पर राष्ट्रपति का संबोधन

राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, 'हमारी विदेश नीति, देश हित पर आधारित है. आर्थिक सहयोग बढ़ाने तथा पारस्परिक संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने के लिए हमने अनेक देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते (Free Trade Agreements) किए हैं. ग्लोबल साउथ के देशों में हम अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं. विश्व पटल पर हमारे देश का सम्मान बढ़ा है. शांति, सहयोग, संवाद और वसुधैव कुटुंबकम् के आदर्श हमारी विदेश नीति के स्तंभ हैं.'

भारत की आधुनिक विकास पर राष्ट्रपति की कथन

उन्होंने कहा, 'आधुनिक विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी भारत विश्वस्तर पर अग्रणी योगदान दे रहा है. रिन्यूएबल एनर्जी के विकास को पिछले कुछ वर्षों में अभूतपूर्व गति मिली है. सस्टेनबल डेवलपमेंट गोल्स 2030 के कुछ लक्ष्यों को हमारे देश ने समय से पहले ही प्राप्त कर लिया है.' राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, 'हमारे देश की अर्थव्यवस्था, सबसे तेज गति से बढ़ती हुई प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में आगे बढ़ रही है. आत्मनिर्भर भारत अभियान से हमारी आर्थिक प्रगति और राष्ट्रीय सुरक्षा का आधार मजबूत हुआ है.'

अमित शाह के खिलाफ बोलकर फंसे राहुल, विशेषाधिकार हनन का नोटिस जारी

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के संसद में दिए एक भाषण को लेकर मुश्किलें बढ़ती हुई नजर आ रही हैं. लोकसभा की विशेषाधिकार समिति ने उनके खिलाफ नोटिस जारी किया है और 28 अगस्त 2026 तक जवाब देने के लिए कहा गया है. बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर और संजय जायसवाल ने लोकसभा स्पीकर ओम बिरला से शिकायत की थी और असंसदीय शब्दों के इस्तेमाल का आरोप लगाया गया था. इस शिकायत पर लोकसभा की समिति ने नोटिस जारी किया है. इस नोटिस में राहुल गांधी पर एंटी पेपर लीक बिल पर हुई चर्चा के दौरान नियम 353 के तहत पर्याप्त पूर्व सूचना के बिना गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ असंसदीय और अपमानजनक भाषा का प्रयोग करने और गंभीर आरोप लगाने का आरोप लगाया गया है. बीजेपी सांसद डॉ. संजय जायसवाल ने भी राहुल गांधी पर गृह मंत्री के खिलाफ कथित रूप से असंसदीय शब्दों के इस्तेमाल का संज्ञान लेने और प्रक्रिया नियमों के तहत उचित कार्रवाई शुरू करने की अपील की गई है।

गंभीर-अगरकर से ऊंचे पद पर बैठेंगे वीवीएस लक्ष्मण

नई दिल्ली। वीवीएस लक्ष्मण का भारतीय क्रिकेट में प्रभाव बढ़ता दिख रहा है. वो अभी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (COE) के हेड हैं, लेकिन भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) उन्हें और भी बड़ी जिम्मेदारी देने पर विचार कर रहा है. कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक बीसीसीआई सितंबर महीने में बहुत बड़े बदलाव करने जा रहा है. बताते चलें कि अजीत अगरकर का चीफ सेलेक्टर के तौर पर कार्यकाल सितंबर महीने में समाप्त हो रहा है और टीम इंडिया का कोचिंग स्टाफ भी सवालों कए घेरे में है. इंडिया टुडे के अनुसार वीवीएस लक्ष्मण को बीसीसीआई में डायरेक्टर ऑफ क्रिकेट बनाया जा सकता है. हालांकि यह भी अपडेट है कि अगरकर का कार्यकाल जून 2027 तक बढ़ाया जा सकता है.वीवीएस लक्ष्मण पहले भी भारत की सीनियर टीम के साथ जुड़े रहे हैं. वो गौतम गंभीर की गैरमौजूदगी में जिम्बाब्वे टूर पर टीम इंडिया के साथ बतौर हेड कोच जुड़े थे, जहां भारत ने टी20 सीरीज 3-0 से जीती थी. अब सवाल है कि डायरेक्टर ऑफ क्रिकेट बनने के बाद लक्ष्मण को क्या नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं. BCCI ने अब तक इस संबंध में कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की है. उम्मीद की जा सकती है कि लक्ष्मण अब सेलेक्शन से लेकर टीम मैनेजमेंट के फैसलों में भी सम्मिलित हो सकते हैं. फ्यूचर टैलेंट के चयन, सेलेक्टर्स और कोचों के साथ वीवीएस लक्ष्मण टीम की प्लानिंग में सम्मिलित हो सकते हैं. बताते चलें कि वो सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में पहले से उभरते हुए खिलाड़ियों के साथ काम करते रहे हैं.

फॉरेन एक्सचेंज स्वैप सुविधा समय से पहले होगी बंद

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक यानी RBI ने देश में विदेशी मुद्रा यानी डॉलर लाने के लिए एक नई योजना की शुरुआत की थी. ये योजना थी FCNR , जिसके तहत जो भारतीय विदेश में रहते हैं वो अपनी विदेशी मुद्रा को भारत में FD के रूप में जमा कर दें. इस योजना के जरिए उम्मीद से भी ज्यादा पैसा मिल गया है. जिसके बाद अब इसे जल्दी ही कुछ समय के लिए बंद किए जाने का फैसला भी कर लिया गया है. दरअसल RBI ने ये FCNR(B) डिपॉजिट के लिए शुरू की गई स्वैप सुविधा तय समय से पहले बंद करने का फैसला लिया है. RBI ने बताया कि इस योजना को काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला है और इसके जरिए बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा देश में आई है. अब बैंक 31 अगस्त 2026 तक जुटाए गए FCNR(B) डिपॉजिट पर ही RBI से स्वैप करा सकेंगे. इसके लिए RBI से स्वैप लेने की आखिरी तारीख 11 सितंबर 2026 होगी.इसकी जानकारी देते हुए RBI ने एक बयान जारी किया है, जिसमें बताया गया है कि, 'FCNR(B) डिपॉजिट की स्वैप सुविधा को काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला है और इससे देश में बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा आई है. इसलिए अब ये सुविधा 31 अगस्त 2026 तक जमा किए गए FCNR(B) डिपॉजिट के लिए ही उपलब्ध होगी. इन डिपॉजिट पर बैंक 11 सितंबर 2026 तक RBI से स्वैप सुविधा ले सकेंगे।

संन्यास के बाद क्या करेंगे रोहित और कोहली?

पॉडकास्ट में अश्विन ने दोनों दिग्गजों के संन्यास की कही बात

नई दिल्ली। विराट कोहली और रोहित शर्मा अभी भारत के लिए सिर्फ वनडे फॉर्मेट में खेलते हैं. दोनों दिग्गजों ने 2024 टी20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट से संन्यास ले लिया था. पिछले साल दोनों खिलाड़ियों ने एक हफ्ते के अंतराल पर टेस्ट को भी अलविदा कह दिया था. इन दोनों के साथ लंबे समय तक ड्रेसिंग रूम शेयर करने वाले रविचंद्रन ने उनके भविष्य पर बात की है. विराट कोहली और रोहित शर्मा ने टीम इंडिया के लिए बहुत कुछ किया है, जिसकी वजह से उन्हें दर्शकों का प्यार भी मिलता है. उनके वनडे से संन्यास के बाद एक बड़ी कमी जरूर महसूस होगी. कोहली और रोहित का लक्ष्य 2027 वनडे वर्ल्ड कप खेलना है, माना जा रहा है कि इस टूर्नामेंट के बाद दोनों वनडे से भी संन्यास ले लेंगे. पहले अटकलें थीं कि वह संन्यास के बाद कोचिंग में अपना करियर बना सकते हैं. अब इस पर अश्विन ने अपने विचार रखे हैं, जो उनके अच्छे दोस्त हैं और साथ में कई मैच खेले हैं.

कोचिंग में आएंगे रोहित और कोहली?

रविचंद्रन अश्विन का मानना है कि संन्यास के तुरंत बाद दोनों में से किसी के भी कोचिंग में आने की संभावना बहुत कम है. उनका मानना है कि दोनों कुछ समय मैदान से दूर समय बिताना चाहेंगे. हालांकि वो ये भी मानते हैं कि रोहित भविष्य में मुंबई इंडियंस के साथ किसी भूमिका में आ सकते हैं.अपने यूट्यूब चैनल पर अश्विन ने कहा, "मैं नहीं समझता कि संन्यास के तुरंत बाद विराट कोहली कोचिंग के लिए तैयार होंगे. हो सकता है रोहित मुंबई के साथ किसी भूमिका में आ जाए, लेकिन कोहली को लेकर मुझे नहीं पता. मुझे लगता है कि वो ब्रेक ले लेगा."

विराट की बात करें तो वह अपने परिवार के साथ लंदन में रहते हैं और वनडे सीरीज या IPL के दौरान भारत आते हैं. हालांकि अश्विन मानते हैं कि संन्यास के तुरंत बाद किसी भूमिका में आने की जगह उन्हें थोड़ा ब्रेक लेकर हेड कोच की जगह किसी और भूमिका से शुरुआत कर सकते हैं.अश्विन ने कहा, "अगर रोहित संन्यास लेते हैं तो तुरंत मुंबई इंडियंस को उन्हें किसी भूमिका में ले लेना चाहे. जिसने टीम को 5 खिताब जिताए हों, भारत को वर्ल्ड कप जिताया, ऐसे आसानी से नहीं मिलते. हेड कोच का काम बहुत मेहनत वाला है, इसलिए वह इस रोल से शुरुआत न करके 2-3 साल ब्रेक लेकर किसी दूसरी भूमिका में आ सकते हैं." उन्होंने राहुल द्रविड़ का उदाहरण देते हुए कहा कि, "जैसे राहुल भाई ने किया, ब्रेक लेकर आए थे."

स्वतंत्रता दिवस पर 600वां टेस्ट खेलने से खुश है गौतम गंभीर

गॉल। गॉल में जब टीम इंडिया श्रीलंका के खिलाफ पहला टेस्ट खेलने उतरेगी, तो ये बड़ा पल होगा. भारत तीसरा ऐसा देश बनेगा, जो 600 टेस्ट खेल चुकी हैं. इस मुकाबले से पहले BCCI ने एक वीडियो शेयर किया, जिसमें हेड कोच गौतम गंभीर, कप्तान शुभमन गिल ने इसे बड़ा पल बताते हुए हर खिलाड़ी को बधाई दी, जिसने भारत का प्रतिनिधत्व किया. कप्तान गिल ने कहा, "ये सौभाग्य है कि 15 अगस्त के दिन हम अपना 600वां टेस्ट खेलना शुरू करेंगे. ये हम सभी के लिए खास मैच है, गौतम गंभीर ने कहा, "600वां टेस्ट स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शुरू हो रहा है, जो हम सभी भारतीयों के लिए बहुत खास दिन है. उपकप्तान केएल राहुल ने कहा, "सभी को बधाई, जो शुरुआत से लेकर अभी तक इस सफर का हिस्सा रहा।

पहले टेस्ट में तांज़िद हसन का शतक बांग्लादेश क्रिकेट में रचा इतिहास

डार्विन। बांग्लादेश के तंजीद हसन ने इतिहास रच दिया है. उन्होंने डारविन में खेले जा रहे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट मैच में शतक जड़ दिया है. यह तंजीद के टेस्ट करियर का पहला शतक है, इसी के साथ वो ऑस्ट्रेलियाई धरती पर टेस्ट सेंचुरी लगाने वाले बांग्लादेश के पहले बल्लेबाज बन गए हैं. उन्होंने 188 गेंदों में शतक पूरा किया.बांग्लादेश टीम पिछले 26 साल से टेस्ट क्रिकेट खेल रही है, लेकिन इस ढाई दशक में ऐसा कोई बल्लेबाज नहीं आया जिसने ऑस्ट्रेलिया में जाकर टेस्ट शतक लगाया हो. तंजीद हसन ऐसा करने वाले पहले खिलाड़ी हैं. उन्होंने अपनी इस जुझारू पारी में 101 रन बनाए और नाथन लायन का शिकार बनने से पहले बांग्लादेश क्रिकेट में नया इतिहास लिख चुके थे. दूसरी ओर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अब तक टेस्ट क्रिकेट में सिर्फ एक ही बांग्लादेशी बल्लेबाज सेंचुरी लगा पाया था।

18000 करोड़ में अंबानी की कंपनी खरीदने जा रहा बैंक ऑफ अमेरिका

नई दिल्ली। जियो फाइनेंशियल सर्विसेज (JFSL) की लोन देने वाली यूनिट जियो क्रेडिट लिमिटेड (Jio Credit Limited) में बैंक ऑफ अमेरिका (BofA) ने 1.9 अरब डॉलर (करीब 18,268 करोड़ रुपये) का भारी-भरकम निवेश करने का फैसला लिया है. इस सौदे के तहत, बैंक ऑफ अमेरिका, जियो क्रेडिट में 49.9% हिस्सेदारी खरीदेगा. यह खरीदारी इक्विटी शेयरों और वारंट के प्रेफरेंशियल अलॉटमेंट के जरिए दो चरणों में की जाएगी. शुरुआती चरण में 6,613 करोड़ रुपये के निवेश से बैंक ऑफ अमेरिका कंपनी में 26.5% हिस्सेदारी खरीदेगा और दूसरे चरण में इसके बाद BofA 11,655 करोड़ रुपये का वारंट सब्सक्राइब करेगा, जिसे 18 महीनों के भीतर शेयरों में कन्वर्ट किया जा सकेगा.अगर इक्विटी शेयरों और वारंट का पूरा सब्सक्रिप्शन हो जाता है, तो इस निवेश की कुल रकम 18,268 करोड़ रुपये या लगभग 1.9 अरब डॉलर होगी. कुल मिलाकर इस डील से शुरुआत में BofA को Jio Credit में 26.5% इक्विटी हिस्सेदारी मिलेगी।

क्यों बढ़ रहा है भारत का व्यापार घाटा ?

नई दिल्ली। जुलाई में भारत का मर्चेंडाइज़ ट्रेड डेफिसिट (Merchandise Trade Deficit) उम्मीद से अधिक बढ़कर 31.98 अरब डॉलर पर पहुंच गया, जो पिछले छह महीनों का सबसे ऊंचा स्तर है. इसकी प्रमुख वजह पश्चिम एशिया (मिडिल ईस्ट) में जारी संघर्ष के कारण कच्चे तेल के आयात बिल और वैश्विक माल ढुलाई (Freight) की लागत में बढ़ोतरी रही. रॉयटर्स के सर्वे में अर्थशास्त्रियों ने जुलाई में व्यापार घाटा 30.20 अरब डॉलर रहने का अनुमान लगाया था, लेकिन वास्तविक आंकड़ा इससे अधिक रहा. जून में यह 30.43 अरब डॉलर था.

आयात क्यों बढ़ा?

वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, जुलाई में भारत का कुल आयात 70.84 अरब डॉलर से बढ़कर 76.22 अरब डॉलर हो गया. इसके पीछे तीन प्रमुख कारण रहे पहला-कच्चे तेल की ऊंची कीमतें, दूसरी इलेक्ट्रॉनिक्स सामान के आयात में तेज बढ़ोतरी और तीसरी सोने की बढ़ती मांग.जुलाई में इलेक्ट्रॉनिक्स (चिप्स समेत) का आयात सालाना आधार पर 44% से अधिक बढ़कर 14.37 अरब डॉलर पहुंच गया. वहीं, सोने का आयात लगभग 5% बढ़कर 4.16 अरब डॉलर रहा.हालांकि तेल आयात का मूल्य जून के 19.33 अरब डॉलर से घटकर जुलाई में 18.31 अरब डॉलर रहा, लेकिन वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की ऊंची कीमतों और परिवहन लागत ने कुल आयात बिल पर दबाव बनाए रखा.

निर्यात ने भी बनाया रिकॉर्ड

जुलाई में भारत का वस्तु निर्यात (Merchandise Exports) 44.24 अरब डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया. इससे पहले जुलाई 2022 में सबसे अधिक 38.34 अरब डॉलर का निर्यात हुआ था. जून 2026 में यह आंकड़ा 40.41 अरब डॉलर था.वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल के अनुसार, इस वित्त वर्ष में अब तक पेट्रोलियम उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक्स और इंजीनियरिंग सामान के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है. पश्चिम एशिया को होने वाला निर्यात भी जुलाई में सालाना आधार पर 8.6% बढ़कर 5.7 अरब डॉलर पहुंच गया.

पड़ोसी देश में बिजली की समस्या, भारत से लगाई है मदद की गुहार

बांग्लादेश है भारत से बिजली का सबसे बड़ा खरीदार

नई दिल्ली। बांग्लादेश इन दिनों गहरे ऊर्जा संकट से जूझ रहा है. नतीजतन, देश के कई हिस्सों में लोग 8-10 घंटे की बिजली कटौती से जूझ रहे हैं. स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सरकार ने देश भर के सभी शॉपिंग मॉल, बाजारों और दुकानों को रात आठ बजे के बाद बंद करने का निर्देश दिया साथ में भारत से भी मदद की गुहार लगाई है. देश में बिजली संकट की इस विकट स्थिति से निपटने के लिए तारिक रहमान की सरकार ने भारत से अतिरिक्त डीजल और ईंधन की सप्लाई के लिए संपर्क किया है. स्थिति को संभालने के लिए कूटनीतिक स्तर पर बातचीत भी जारी है. भारत में Adani Power समेत कई बड़ी कंपनियां बांग्लादेश को बड़े पैमाने पर बिजली बेचती है, लेकिन समय पर बिल का भुगतान न कर पाने के कारण झारखंड के गोड्डा प्लांट से बांग्लादेश को होने वाली बिजली की सप्लाई में गिरावट आई है. चूंकि बांग्लादेश का विदेशी मुद्रा भंडार सीमित है इसलिए अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से कोयला और गैस आयात करने के लिए भी इसके लिए मुश्किल हो रहा है.इस क्रम में आइए जानते हैं कि भारत से किन-किन देशों में बिजली की सप्लाई की जाती है. भारत सबसे ज्यादा बिजली बांग्लादेश को ही बेचता है. भारतीय बिजली का सबसे बड़ा खरीदार बांग्लादेश ही है. भारत सालाना करीब 1 बिलियन डॉलर से अधिक की बिजली बांग्लादेश को बेचता है.

लिस्ट में ये देश भी शामिल

नेपाल- नेपाल और भारत के बीच बिजली का दो-तरफा कारोबार होता है. सर्दियों के समय में जब नेपाल में पानी कम होता है और हाइड्रोपावर का उत्पादन घटता है, तो भारत उसे बिजली बेचता है. इसी तरह से मानसून में प्रोडक्शन बढ़ने से नेपाल वापस से भारत को बिजली बेचता है.

भूटान- भूटान में सर्दियों के मौसम में बिजली की कमी को पूरा करने के लिए भारत उसे बिजली बेचता है, जबकि अन्य दिनों में भूटान से हाइड्रोपावर का आयात करता है. मई से नवंबर के बीच भूटान में नदियों का बहाव तेज होने के कारण हाइड्रोपावर का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है. इस दौरान भूटान अपनी जरूरत से ज्यादा अतिरिक्त बिजली भारत को बेच देता है.

म्यांमार- भारत सीमावर्ती इलाकों में ग्रिड कनेक्टिविटी के जरिए म्यांमार को भी सीमित मात्रा में बिजली बेचता है.

भारत और श्रीलंका के बीच भी अंडर-सी ट्रांसमिशन लाइनें बिछाने और बिजली कारोबार को बढ़ाने के लिए उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठकें चल रही हैं. दोनों देश ऊर्जा सुरक्षा और रिन्यूऐबल एनर्जी को बढ़ावा देने के लिए संपूर सोलर पावर प्रोजेक्ट की भी समीक्षा कर रहे हैं.

टर्बुलेंस विवाद के बीच एयर इंडिया जल्द बढ़ाएगी सैलरी

नई दिल्ली। एयर इंडिया पिछले काफी दिनों से चर्चा में है. बीते कुछ ही दिनों में इसकी फ्लाइट्स में टर्बुलेंस की खबरें सामने आईं, जिसने इसकी सर्विसेज पर सवालिया निशान खड़े कर दिए हैं. इसी बीच एयर इंडिया के कर्मचारियों के लिए एक अच्छी खबर सामने आ रही है. खबरें हैं कि जल्दी ही एयर इंडिया के कर्मचारियों की सैलरी बढ़ेने वाली है. कुछ दिन पहले ही ये खबर भी आई थी, अब इस खबर को खुद एयर इंडिया के CEO कंफर्म कर दिया है. कंपनी के CEO और MD कैंपबेल विल्सन ने गुरुवार को टाउनहॉल मीटिंग में कर्मचारियों को इस बात की जानकारी देते हुए बताया कि, एयरलाइन 1 अक्टूबर से सालाना सैलरी इंक्रीमेंट शुरू करने जा रही है. विल्सन ने इस मीटिंग में जिक्र किया कि मिडिल ईस्ट में जारी तनाव के कारण एयरलाइन ने सैलरी बढ़ाने की प्रक्रिया को टाल दिया था. क्योंकि इस संकट की वजह से एयरलाइन के ऑपरेशन और वित्तीय स्थिति पर कापी दबाव पड़ा है. ईंधन की कीमतें बढ़ीं, एयरस्पेस में रुकावट आई और रुपये की कमजोरी जैसी चुनौतियां भी सामने आी थीं जो अब भी बनी हुई हैं. बावजूद इसके एयर इंडिया अपने विमान बेड़े को आधुनिक बनाने की प्लानिंग पर आगे बढ़ रहा है.इतना ही नहीं इस मीटिंग में ये भी बताया गया कि एयर इंडिया ग्रुप की योजना 2027 और 2028 के दौरान 100 से ज्यादा नए विमान अपने बेड़े में शामिल करने की है।

अंग्रेज वसूली के लिए नियुक्त करते थे मुकद्दम

डॉ. प्रकाश पतंगीवार

सन् 1745 में हैहयवंशियों का राज समाप्त हो गया था। तब मराठों ने छत्तीसगढ़ पर कब्जा जमाया। मराठा शासन लगभग सौ वर्षों तक चला। सन् 1854 में कृष्णराव अप्पाजी को हटाने के साथ अंग्रेज छत्तीसगढ़ की धरती पर काबिज हो गए। चार्ल्स अलेक्जेंडर इलियट (कैप्टन इलियट) छत्तीसगढ़ के प्रथम डिप्टी कमिश्नर बनकर आए, परंतु सारंगगढ़ के पास सालर गाँव में उनकी मृत्यु हो गई, जहाँ उनकी समाधि आज भी स्थित है।

छत्तीसगढ़ में अंग्रेजों के शुरुआती शासनकाल में प्रशासनिक व्यवस्था में कोई खास परिवर्तन नहीं किया गया। मालगुजार ही लगान वसूल करते थे। मराठों के समय छत्तीसगढ़ का राजस्व लगभग पाँच लाख रुपये था। अंग्रेजों ने प्रशासनिक नियंत्रण के लिए नया पद 'ग्राम पटेल' बनाया और उन्हें लगान वसूलने की जिम्मेदारी दी। ब्रिटिश सरकार ने भू-राजस्व संहिता की धारा 244 के तहत जिन्हें नियुक्त किया, उन्हें 'मुकद्दम' कहा गया। यही स्थानीय स्तर पर 'गौटिया' या 'सियान' कहलाए।

अनेक उतार-चढ़ाव को अंगीकृत किए राजा पृथी

डॉ. लक्ष्मीधर झा

अंग्रेजी शासन काल में राजा पृथी साय अंग्रेजों के मार्गदर्शन में राज्य का सफल संचालन करने लगे। फुलझर एक वन राज्य था, इस कारण अंग्रेज इस राज्य से अधिक से अधिक लाभ लेना चाहते थे। इसलिए वे व्यवस्था को अपने अनुरूप करने में जुट गए। कृषि के क्षेत्र में कोई प्रगति नहीं हुई थी; लोग प्राचीन परंपरा के अनुसार कोदो, कुटकी और मक्का की खेती करते थे। इस राजा के कार्यकाल में अंग्रेजों के विरोध में संघर्ष की कोई घटना नहीं हुई। बाजार में कौड़ियों का चलन था।

राजा पृथी साय ओडिशा के अन्य राजाओं की तरह अंग्रेजों के अधीनस्थ थे। मराठों की पराजय के बाद अंग्रेजों का पूर्ण आधिपत्य हो गया था। अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य यहाँ के लोगों को अशिक्षित/अभिज्ञ रखना था, जिससे यहाँ के लोगों में राष्ट्रीय चेतना का उदय न हो सके। अंग्रेजों को प्रारंभिक अवस्था में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ा; उन्हें संदेह था कि देशी रियासतें कभी भी अंग्रेजों के विरुद्ध हो सकती हैं। देशी रियासतों का मराठा शासन ने भी पूरी तरह शोषण किया था।

अंग्रेजी शासन का कहीं भी सशक्त विरोध नहीं हो रहा था। सन् 1833 में बरगढ़ के राजा अजीत सिंह ने बगावत का बीड़ा उठाया था, किंतु वे असफल हो गए। सारी देशी रियासतों का भविष्य अंग्रेजों की कृपा पर टिका हुआ था; अधिकांश राजा और जमींदार अंग्रेजों के सहयोगी बन चुके थे। प्रजा राजा को देवतुल्य मानती थी। इनके राजत्व काल के उत्तरार्ध में अंग्रेजी सिक्कों का चलन शुरू हुआ।

नवागांव में भी जली थी आजादी की मशाल

डॉ. हेमवती ठाकुर

छत्तीसगढ़ के धमतरी से 6 किमी दूर नवागांव में 9 अगस्त 1930 को 'जंगल सत्याग्रह' आरंभ हुआ। सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिए तैयार सभी प्रमुख नेताओं को प्रारंभ में ही गिरफ्तार कर लिया गया। इससे ग्रामवासियों का हौसला कम नहीं हुआ। वे प्रतिदिन प्रतिबंध के बावजूद घास काटने तथा वनोपज पर अधिकार के नारे लगाने लगे। रोज जुलूस निकलने लगा और भीड़ बढ़ती गई। एक दिन जब बहुत ज्यादा आंदोलनकारी एकत्रित थे, तब पुलिस ने लाठीचार्ज कर गोलियाँ चलाईं। इसमें सिंधू और रतनू को गोली लगी। उन्हें घायल अवस्था में रायपुर जेल भेज दिया गया, जहाँ 25 सितंबर 1930 को सिंधू शहीद हो गए। रतनू को तीन माह रायपुर जेल में रखने के बाद नरसिंहपुर जेल स्थानांतरित कर दिया गया। इस घटना के बाद नवागांव जंगल सत्याग्रह की गूँज पूरे देश में फैल गई।

छत्तीसगढ़ी काव्य का दूसरा पड़ाव: स्वाधीनता आंदोलन के मध्य

डॉ. सत्यभामा आडिल

छत्तीसगढ़ी काव्य का दूसरा पड़ाव स्वाधीनता आंदोलन की हलचलों के मध्य आकार लेता है। तत्कालीन जनभावना का जैसा यथार्थ आकलन कुंजबिहारी चौबे की रचनाओं और गिरिवर दास वैष्णव की कृति 'छत्तीसगढ़ी सुराज' में हुआ है, वह अद्वितीय है। उनकी रचनाओं में अंग्रेजों के प्रति ग्रामीण आक्रोश की तीखी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। कविता 'चल मोर भय्या बियासी के नागर' में समूचा ग्रामीण जीवन जीवंत हो उठा है:

पहिरे बर दू बीता के पागी जी,
पिए ल चोंगी धरे ल आगी जी,
खाए ल बासी पिए ल पेज पसिया,
करे बर दिन रात खेत म तपसिया,
साधू जोगी ले बड़ के दरजा हे हमर,
चल मोर भय्या बियासी के नागर।

इसी प्रकार रचना 'तैं हर ठग डाले हमला रे गोरा' में अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों को उजागर किया गया है, जबकि 'गांधी गोरा' में महात्मा गांधी के आगमन की दिव्यता, रचनात्मक कार्यक्रमों तथा उनके अहिंसक सत्याग्रह का ओजस्वी गुणगान किया गया है।

समर्पित होकर देश सेवा में अपना योगदान देने वाले पूनमचंद सांखला

वीरेंद्र बहादुर सिंह

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पूनमचंद सांखला का जन्म 15 अप्रैल सन् 1906 को उनके ननिहाल ग्राम खैरबना (छुईखदान) में हुआ था। उनके पिता का नाम छगनलाल सांखला था। वे ग्राम सांडी के मूल निवासी थे। छुईखदान में रियासती आंदोलन शुरू होने के पूर्व उन्हें दो-तीन बार वर्धा जाने का अवसर प्राप्त हुआ, जहाँ वे महात्मा गांधी के संपर्क में आए। सन् 1930-31 के रियासती आंदोलन में अपने पिता के विरोध के बावजूद वे सक्रिय रूप से शामिल हुए।

सन् 1939 में स्टेट कांग्रेस द्वारा 'नर्मदा कैंप' से संचालित सत्याग्रह आंदोलन में भी उन्होंने भाग लिया। आंदोलन के दौरान मेलाराम ठेकेदार के नेतृत्व में निकले जुलूस में वे अग्रिम पंक्ति में थे। रियासत की सीमा का उल्लंघन करने पर उन्हें गिरफ्तार कर एक माह की सजा सुनाई गई।

श्री सांखला ने 1940 के कांग्रेस अधिवेशन तथा 1939/1941 के त्रिपुरी अधिवेशन के दौरान सांगठनिक गतिविधियों में भाग लिया। सन् 1942 में श्री सांखला ने 'छुईखदान-खैरागढ़ किसान सभा' का गठन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और वे किसान सभा के मंत्री बनाए गए।

गांधीजी के 'करो या मरो' के आह्वान पर 1 सितंबर 1942 को वे छुईखदान में मुंबई अधिवेशन के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव की प्रतियाँ वितरित करते हुए गिरफ्तार हुए। उन्हें तीन साल के सख्त कारावास की सजा सुनाई गई। 10 मई 1944 को वे जेल से रिहा हुए, जिसके बाद उन्हें स्टेट कांग्रेस परिषद का मंत्री बनाया गया।

किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य दिलाने और साहूकारों के शोषण से मुक्त कराने के लिए उन्होंने 1946 में किसान सभा के माध्यम से व्यापारियों द्वारा की जा रही धांधली की जाँच की और उसकी रिपोर्ट जिम्मेदार अधिकारियों को सौंपी। आजादी के बाद श्री सांखला संत विनोबा भावे के 'भूदान आंदोलन' से जुड़े। वे ग्राम पंचायत सांडी के सरपंच भी निर्वाचित हुए। 25 मई 1981 को उनका निधन हो गया।

साप्ताहिक शहरसत्ता
हम दिखाएंगे आईना...

स्वतंत्रता से सुरक्षा तक, विरासत से विकास तक, नई पहचान गढ़ रहा छत्तीसगढ़

80वें स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त 2026

की समस्त छत्तीसगढ़ वासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं...

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से
जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करें।

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

सुशासन से समृद्धि की ओर...

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

SAMVAD- 13969/ 63

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक श्री सुकांत राजपूत द्वारा ए.आर. प्रिंटर्स, निरंकारी फर्नीचर के पीछे, पंडरी रायपुर से मुद्रित एवं शहरसत्ता, एस-15 प्रियदर्शिनी नगर, सेक्टर 1, मातृ-पितृ छाया अपार्टमेंट, रायपुर (छ.ग.),
मोबाईल नं. 98271-81979, फोन नं. 0771-3158142, संपादक - सुकांत राजपूत (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार के लिए जिम्मेदार), महाप्रबंधक - प्रदीप चंद्रवंशी (मो. 70006-81023)। डाक पंजीयन - CG/RYP/DN/70/2025-27